M.A. I Semester CC-1
इकाई - 4. भाषिक टिप्पणियाँ 01

① प्र. ध्वनि परिवर्तन के स्वरूप एवम् उसके प्रकारों का विस्तृत उल्लेख कीजिए।

स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, एवं ध्वनि व्यंजन परिवर्तन।

: वर्ण एवं उसके भेद-प्रभेद।

स्वर ध्वनि :- ध्वनि शब्दों की आधारशिला है जिसके बिना शब्द व कल्पना नहीं की जा सकती। अ आ इ ई आदि जब मनुष्य की वर्णेन्द्रिय द्वारा व्यक्त होते है, तब ये ध्वनियाँ कहलाती है। इनके लिखित रूप को 'वर्ण' कहते है। वर्ण को ध्वनि-चिन्ह भी कहते है। ध्वनि बोलने और सुनने में आती है लेकिन वर्ण लिखने, पढ़ने और देखने में आता है। अतएव लघुतम ~~वाक~~ वर्ण-ध्वनि वर्ण है।

वर्ण की परिभाषा :- किसी भी भाषा की मूल ध्वनियाँ तथा उनकी आकृतियों या चिन्हों को वर्ण कहते है।

दूसरे शब्दों में वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते है, जिसका खण्ड न हो जैसे :- 'पानी' शब्द में (पा) और (नी) दो ध्वनियाँ है इसके भी चार खण्ड है

∴ प + आ और न + ई। इसके बाद इन चार ध्वनियों के टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं। इसलिए ये मूल ध्वनियाँ वर्ण या अक्षर है।

प्राकृत व्याकरण में वर्ण को दो भागों में विभाजित किया जाता है:

(i) स्वर वर्ण तथा (ii) व्यंजन वर्ण

(i) स्वर वर्ण की परिभाषा :-

जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित न हो, उसे स्वर वर्ण कहते है। जैसे - अ, आ, इ, ई, उ ये सभी स्वर वर्ण है।

स्वर वर्णों दो वर्गों में विभाजित किया गया है। - (i) ह्रस्व स्वर और (ii) दीर्घ स्वर

(i) ह्रस्व स्वर :- जिन स्वरों की उत्पत्ति दूसरे स्वरों से नहीं हो उसे मूल या ह्रस्व या एकमात्रिक स्वर कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ।

(ii) दीर्घ स्वर : किसी मूल या ह्रस्व स्वर के साथ मिलाने से जो स्वर बनता है, वह दीर्घ स्वर कहलाता है।

जैसे — आ (अ + अ) इ + इ = ई,
उ + उ = ऊ अ + इ = ए अ + उ =
इनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है। इन्हें द्विमात्रिक स्वर भी कहते हैं।

नोट :- प्राकृत भाषा में ऋ, ऐ, औ अः स्वर वर्ण नहीं पाये जाते हैं।

व्यंजन वर्ण

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-वर्णों की सहायता अपेक्षित है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। दूसरे शब्दों में प्राकृत व्याकरण के नियमानुसार व्यंजन वर्ण वे हैं जिसके उच्चारण में स्वर वर्णों की सहायता अपेक्षित हो। ये व्यंजन वर्ण निम्न प्रकार हैं।

क वर्ग — क, ख, ग, घ, (कण्ठ्य)	04
च वर्ग → च, छ, ज, झ, (तालव्य)	05
ट वर्ग → ट, ठ, ड, ढ, ण, (मूर्धन्य)	05
त वर्ग → त, थ, द, ध, न, (दन्त्य)	05
प वर्ग — प, फ, ब, भ, म, (ओष्ठ्य)	05
य, र, ल, व, श, ष, (अन्तस्थ)	06
स, ह : (ऊष्मा)	02
	32 वर्ण